(लोकश्रुति नाट्य)

हारमती निर्वासन

मुनीन्द्र मिश्र

पात्र परिचय : पोलो डूलिया- ईटायोपा (आधुनिक ईटानगर) के राजा, हारमती- पोलो डूलिया की रानी, झील राजा- ग्याकेर सिन्यी झील क्षेत्र का राजा, रानी- झील राजा की पत्नी, मंत्री- ईटायोपा का प्रधानमंत्री, सेनापति- ईटायोपा का सेनापति, सैनिक- ईटायोपा का सैनिक, (द्वारपाल, द्वार सेविका आदि)

प्रथम दृश्य

(राजा पोलो डूलिया का मंत्रणा कक्ष, राजा मंत्री व सेनापति के साथ चर्चा करते हुए)

राजा- (चिंतित व क्रोधित स्वर में) 'आज मेरे लिए निस्संदेह कष्ट की बात है। यह सोचकर मेरा सिर शर्म से झुका जा रहा है कि मैं हिमालय की हथेली में शासन करते हुए इतना कमजोर हो गया कि मेरी जनता मेरे राज्य से लगे ग्याकर सिन्यी झील पर मत्स्याखेट नहीं कर सकती। क्या झील का तुच्छ शासक ईटायोपा के राज्य को चुनौती दे सकने की स्थिति में आ गया। मैं निश्चित रूप से उस नराधम को सबक सिखाऊंगा।'

मंत्री- (विनम्र स्वर में) 'महाराज की जय हो। महाराज मैं क्षमाप्रार्थी हूँ, परंतु झील राजा से आपकी प्रतिद्वंदिता सर्वविदित है। वे आज तक परम विदुषी सौंदर्यमयी महारानी हारमती से आपके विवाह को भुला नहीं पाये हैं और आपको उकसाने हेतु विभिन्न कार्यवाहियाँ करते रहते हैं। अत: किसी राज्य के उकसावे में हमें नहीं आना चाहिए।'

राजा- 'परंतु मंत्रिवर यह मेरे लिए असंभव है कि मैं उसकी धृष्टता को अनदेखा कर दूँ, मैं अवश्य ही उसे दंड दूँगा।'

मंत्री- 'पर राजन, अभी उनसे भिड़ने का उचित समय नहीं है। हम उनके क्षेत्र में जाकर घिर भी सकते हैं।'

राजा- 'नहीं मंत्रिवर, हम योद्धा हैं, हम समय से नहीं घबराते। सेनापति जी, आपका क्या विचार है?'

सेनापति-'मैं महाराज की आज्ञा पालन को तत्पर हूँ।'

राजा- (आदेश देते हुए) 'तो अपने योद्धाओं के साथ कुछ मछुआरों को लेकर जाइये और ग्याकर सिन्यी झील की सभी मछलियाँ पकड़ लाइए।'

'मंत्री- 'महाराज, मेरा आपसे पुन: अनुरोध है कि आप अपने फैसले पर पुनर्विचार कर लें।'

राजा- (आवेश में) 'कदापि नहीं, और मंत्रिवर हमें ऐसी सलाह मत दें कि हमें अपना गौरव भुलाना पड़े।

सेनापति जी, हमें शीघ्र ही आपसे शुभ समाचार सुनने की आशा है।'

द्वितीय दृश्य

(ईटायोपा राजा का मंत्रणा कक्ष, राजा चिंतित अवस्था में टहलते हुए...)

राजा- (स्वगत) 'सेना व मछुआरों को झील पर आक्रमण के लिए दो दिन हो गये, अब तक कोई सूचना नहीं। कहीं कोई अनहोनी तो नहीं घटी, उस दिन मंत्री जी ने मुझे बार-बार आगाह किया था, पर क्रोध के कारण मैं कुछ सोच न सका, निश्चित रूप से मंत्री जी की सलाह विचारणीय थी। (सेवक को पुकारते हुए) कौन है यहाँ पर।'

सेवक- 'महाराज की जय हो।'

राजा- 'जाओ, प्रधानमंत्री जी को बुला लाओ।'

सेवक- 'जो आज्ञा महाराज।' (सेवक चला जाता है)

(मंत्री का प्रवेश, तभी दरबान का आगमन)

मंत्री- 'महाराज की जय हो।'

दरबान- 'महाराज की जय हो। महाराज एक सैनिक ग्याकर सिन्यी झील से रुग्ण अवस्था में आया है तथा आपके दर्शन की आज्ञा चाहता है।'

राजा- (व्यग्र होकर) 'जाओ, उसे जल्दी लेकर आओ।'

(दरबान के साथ सैनिक का आगमन, दरबान वापस चला जाता है)

सैनिक- (कमजोर स्वर में) 'महाराज की जय हो।'

राजा- 'कहो, सैनिक क्या समाचार लाये हो।'

सैनिक- (रुग्ण अवस्था में) 'महाराज, सेनापति जी व सैनिक टुकड़ी जब मछुआरों के साथ झील पर पहुंची तो झील पर चारो ओर झील राजा की सेना छुपी हुई थी तथा सेनापति जी द्वारा मछुआरों को झील में उतरने का आदेश देते ही पूरी टुकड़ी को झील राजा की सेना द्वारा घेर लिया गया तथा बिना लड़ाई किये ही आत्म-समर्पण को मजबूर कर दिया गया। मुझे प्रताड़ित कर आपको संदेश देने हेतु घायल अवस्था में छोड़ दिया गया है।'

राजा- (स्तंभित होकर) 'क्या! पूरी टुकड़ी को मछुआरों सहित पकड़ लिया गया। हे भगवान! मैंने ये क्या किया, मैंने ये आवेश में आकर क्या कर डाला, मंत्रिवर आपकी सलाह न मानकर मैं पूरी सेना का दोषी हो गया। अब क्या किया जाये मंत्रिवर।'

मंत्री- 'महाराज, जो हुआ वह शायद ईश्वर का विधान था। पर अब आगे के बारे में सोचना आवश्यक है। अब निश्चित रूप से झील राजा से वार्ता आवश्यक है ताकि इस समस्या का हल निकाला जा सके।'

राजा- 'पर मंत्रिवर क्या वो अब हमारी सुनेगा?'

मंत्रिवर- 'महाराज, जो घटा है उसकी जिम्मेदारी से हम मुकर नहीं सकते। अत: इसका हरजाना तो भरना ही होगा और इसलिए वार्ता आवश्यक है, अन्यथा इतने लोगों के वहां कैद रहने पर जनता में असंतोष बढ़ सकता है। महाराज, वीरगति पाए सैनिक भविष्य के लिए उपयोगी न होकर भी सम्मान व महत्त्व का कारण बनते हैं, पर सैनिक कैद होकर अपने राजा व जनता दोनों के लिए बोझ बन जाता है।'

राजा- (टूटे स्वर में) 'पर मंत्रिवर दूत किसे भेजे?'

मंत्री- 'यदि महाराज को आपत्ति न हो तो इस हेतु मैं स्वयं प्रस्तुत हूँ।'

राजा- 'मंत्रिवर, मैं अपनी अक्षम्य त्रुटि की ज्वाला से जल रहा हूँ, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, यदि मेरे जीवन से भी त्रुटि सुधार हो सके और सैनिकों तथा मछुआरों की रिहाई संभव हो तो वह भी कीजिए मंत्रिवर।'

तृतीय दृश्य

(ग्याकर सिन्यी झील राजा का दरबार)

दरबान- 'महाराज की जय हो। महाराज, ईटायोपा के प्रधानमंत्री आपके दर्शन की आज्ञा चाहते हैं।'

झील राजा- 'जाओ, उन्हें सम्मान से ले आओ।'

(मंत्री का प्रवेश)

मंत्री- 'राजन की सेवा में ईटायोपा का प्रधानमंत्री व राजा पोलो डूलिया का दूत प्रणाम करता है।'

झील राजा- 'प्रणाम मंत्रिवर। कहिये मंत्रिवर, कैसे आना हुआ?'

मंत्री- 'राजा की सेवा में निवेदन करना था। राजन हमसे त्रुटियाँ हुई जिसके परिणाम स्वरूप हमें पराजय का मुख देखना पड़ा और हमारी सेना का एक अंग, सेनाप्रमुख व कुछ ईटायोपा निवासियों को आपकी कैद में आना पड़ा। राजन मैं महाराज पोलो डूलिया की ओर से घटनाओं के लिए खेद प्रकट करता हूँ तथा राजन द्वारा निर्धारित हरजाना भरने की प्रार्थना करता हूँ।'

झील राजा- (व्यंग से) 'महाराज पोलो डूलिया का दूत। हिम पर्वत माला के गौरव महाराज पोलो डूलिया का दूत और वह हमसे अपने महाराज की ओर से क्षमा मांग रहा है। उसे अपनी विजयों तथा अपने राज्य पर बड़ा गर्व था वो अब कहाँ गया। उसे तो सबसे बड़ा गर्व उस सुंदरी रानी हारमती का था जिसके कारण आज वो पूरे हिम पर्वत माला के राज परिवारों में अपने को सर्वश्रेष्ठ समझता है। क्यों? भला वो क्या हरजाना देगा?'

मंत्री- (गुस्से को दबाते हुए धीर स्वर में) 'जो भी राजन की आज्ञा हो। राज्य क्षेत्र, संपत्ति या जो उचित लगे।'

झील राजा- (गर्व से) 'उचित लगे सो तो मैं योद्धा हूँ। क्षेत्र व संपत्ति अपने बाहुबल से एकत्र करने में विश्वास रखता हूँ और वो क्या दे सकता है? अरे, हाँ उसके पास देने लायक बहुत बड़ा भंडार है, रानी हारमती, क्या वह हमें दे सकता है?'

मंत्री- (आवेश में) 'राजन।'

झील राजा- (व्यंग्य से कठोर शब्दों में) 'मंत्री जी आवेश में मत आइये, आप दूत हैं, आपके राजा ने जब हारमती को ग्रहण किया था तो उसने स्वयं को सर्वोच्च मान लिया था और वो हारमती हमें ठुकराकर उसकी बन गई थी (थोड़ा रूककर) हाँ अब बंदियों की रिहाई बस हारमती के सौंपने पर ही संभव है।'

मंत्री- (कुछ रोषपूर्ण स्वर में) 'राजन, महारानी हारमती एक पतिव्रता नारी है, गर्भवती हैं और गर्भवती स्त्री को ग्रहण करने की बात करना भी बहुत बड़ा पाप होगा।'

झील राजा- (घमंड से) 'पाप और वो भी सौंदर्य देवी हारमती के लिए सब स्वीकार्य है, मंत्रिवर। संपत्ति के लिए मनुष्य क्या पाप नहीं करता। तुम्हारा महाराज भी मछली चुराकर पाप ही तो कर रहा था। सुंदरी हारमती तो अमूल्य रत्न है, उसके लिए सारे पाप स्वीकार्य है।'

मंत्री- (निवेदन करते हुए) 'राजन, जरा गंभीरता पूर्वक विचार करें कि एक राजा के लिए ऐसा दुराग्रह उचित है?'

झील राजा- (आवेश में) 'बस मंत्रिवर, आपने हरजाने की बात की और मैंने आपको अपना प्रस्ताव बता दिया, आप दूत है, जाइये अपने महाराज को मेरा प्रस्ताव बताइए।'

मंत्री- (हाथ जोड़कर करुण स्वर में) 'राजन, आपसे पुन: निवेदन है कि आप बड़े से बड़ा हरजाना मांग लें पर महारानी तो ईटायोपा का सम्मान हैं उन्हें न मांगे महारानी हारमती के बिना तो ईटायोपा अनाथ हो जायेगा, राजन आप ईटायोपा पर दया करें।'

झील राजा- (व्यंग से) 'मंत्रिवर, दया और ईटायोपा पर। उस ईटायोपा पर, जिसका राजा पोलो डूलिया है, कदापि नहीं। उस ईटायोपा की रानी जब तक हारमती है तब तक कदापि नहीं। बस, मंत्रिवर बस, (हाथ उठाकर) मैंने अपना प्रस्ताव आपको बता दिया जाइये अपने राजा को बताइए। अब सभी यहीं समाप्त होती है।'

चतुर्थ दृश्य

(ईटायोपा का अंत:पुर महाराज पोलो डूलिया व रानी हारमती दु:खी स्वरों में चर्चा करते हुए...)

राजा- (करूण स्वर में) 'प्रिये आज मैं शोक के अथाह सागर में डूबा जा रहा हूँ, कहीं किनारा नज़र नहीं आ रहा है। एक और राजा का महान कर्तव्य तथा दूसरी ओर मेरे जीवन आधार तुम। वह भी मेरे राज्य के उत्तराधिकारी को उदर में धारण किये हुए। हे प्रभु! तूने यह दिन क्यों दिखाया, मैंने सदैव सत्य व धर्म की रक्षा की तथा तेरी अर्चना की और आज तू ही मेरी इतनी कठिन परीक्षा ले रहा है।'

हारमती- (दुखी किंतु दृढ़ स्वर में) 'हे प्राणेस्वर, यह सब मेरे किन्हीं पापों का फल है जो मुझे आज आपसे अलग होना पड़ रहा है, पर महाराज आप धीरज रखिये। मैंने जरूर कुछ पुण्य भी किये हैं, जो आज ईटायोपा की जनता के लिए अपना प्रेम उत्सर्ग करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।'

राजा- 'पर प्रिये, धैर्य करूँ तो कैसे। अब मेरे जीवन की नैया किस प्रकार पार लगेगी जब कि तुम्हीं न होगी, तथा मेरे जीवन का आधार जो तुम्हारे गर्भ में है वह न होगा। अब मैं क्या करूँ, एक राजा होने की इतनी बड़ी परीक्षा। एक सामान्य पुरुष होता तो प्रेम को जिम्मेदारी पर वरीयता देता, पर हतभागी मैं, पूर्वी हिमालय पर्वतमाला का गौरव, आज कितना बेबस और लाचार हूँ। हारमती क्या-क्या याद करूँ? जब तुम्हारे इस सुकोमल मुखड़े को प्रथम बार देखा था तब से आज तक यह मेरी आँखों की ज्योति बनकर रहा, तुम्हारे इन गुलाब की पंखुरियों जैसे होठों की बोली से मेरे कान सदैव संगीत का रस लेते रहे, तुम्हारे गोद पर सर रखकर मैंने सदैव निद्रा का आह्वान किया, तुम्हारे गालों की लाली को सदैव सूर्य देव की लाली से पहले देखा है। तुम्हारी हथेलियां सदैव मेरे शरीर का ताप हरती रही हैं, तुम्हारी पलकों की छांव सदैव युद्धभूमि की सारी पीड़ा भुला देती थी। हे विधाता! क्या अब तू मुझे इन सबसे वंचित कर देगा?'

हारमती- (करूण स्वर में) 'हे प्राणाधार, आप धीरज रखिये आज जीवन में पहली बार इस दासी को अवसर मिला है कि आपके कर्तव्य पथ पर आपके साथ चल सके। अब आप मुझे कमजोर न कीजिये, महाराज, आपका प्रताप ही है जो मैं आज उस नीच राजा के संरक्षण में जाने का साहस कर पा रही हूँ, पर जब आप ही धैर्य छोड़ देंगे तो में किसके सहारे साहस करूँ।'

राजा- (रोते हुए) 'हाय हारमती! किस प्रकार साहस करूँ? किन मुश्किलों से इतने इच्छुक राजाओं के होते हुए भी तुम्हें अपना बना पाया था। वह भी केवल इतने क्षणों के लिए और फिर भी कहती हो कि साहस करूँ, बताओ कैसे?'

हारमती- (रो पड़ती है) 'महाराज, अब मेरा धीरज टूट रहा है, अब मुझे वो हर क्षण याद आने लगा जो मैंने आपके प्रेम में जिया है। कल जब मंत्रिवर उस नराधम राजा का प्रस्ताव लाये थे तब मैंने मन को कड़ा कर लिया था और अपने प्रेम के सभी स्मृति चिह्नों को अपने हृदय द्वार में बंद कर साहस रूपी ताला लगा दिया था, पर अब वो ताला भी टूट रहा है, अब आप मुझे कमजोर न करें, अन्यथा प्रियवर, मैं राज्य सुख को वरीयता देने का धैर्य छोड़ दूंगी।'

राजा- (विलाप करते हुए धैर्य से) 'हारमती, लो एक बार और अपनी गोद में मेरा सर रखकर मुझे सुला दो और मेरे जागने के पहले यहाँ से चली जाओ ताकि कहीं तुम्हें जाता देखकर मैं अपना जीवन ही न त्याग दूँ या कर्तव्य पथ से विमुख हो जाऊँ या फिर उस नराधम को सबक सिखाने की सोच अपने सैनिक टुकड़ी का जीवन खतरे में न डाल दूँ।'

पंचम दृश्य

(झील राजा का अन्त:पुर राजा अपनी रानी के साथ)

रानी- राजन, 'यह मैं क्या सुन रही हूँ कि आप परम पतिव्रत, ईश्वर भक्त रानी हारमती को उसकी गर्भावस्था की स्थिति में ग्रहण/ स्वीकार कर रहे हैं। देव, गर्भावस्था की स्थिति में तो जानवर को भी कष्ट नहीं दिया जाता और आप एक नारी के साथ इतना बड़ा अत्याचार करने जा रहे हैं।'

झीलराजा- 'प्रिये, आप उस राजा पोलो डूलिया को नहीं जानती, वो केवल उस रानी हारमती के बल पर ही पूर्वी हिमपर्वत क्षेत्र में स्वयं को सर्वोच्च बनाए हुए हैं, जिसे मैं अपनी आँखों से नहीं देख सकता।'

रानी- 'तो देव, पोलो डूलिया का बदला एक गर्भवती लाचार नारी से, क्यों? ऐसा अनाचार भला क्यों देव, क्यों?'

झीलराजा- 'रानीजी, मुझे हारमती को अपने महल में देखना है, वो अब इसी महल में तुम्हारी दासी बनकर रहेगी।'

रानी- (उत्तेजना भरे स्वर में) 'तो देव, ये कहिये न कि आपकी वासना ने अपना प्रभाव दिखाया है, जो आप अपने आप को भूल गये, मैं भला किस मुख से हारमती को दासी बनाऊँगी, (ऊपर देखते हुए) हे भगवान ! इनमें ये क्या विचार भर दिये, उस पतिपरायण सदाचारी स्त्री को अपने राज्य में बलात् रोककर क्या ये तेरा कोपभाजन बनना चाहते हैं, क्या अब इन्हें राज्य का सुख अपनी कामेच्छा के स्थान पर गौण हो गया। (राजा से) देव, आप मुझे कहीं से संखिया ला दीजिए ताकि उस देवी को आपकी वासना का शिकार होते देखने से पहले यह घृणित

जीवन त्याग दूँ। राजन, यदि आप ने ऐसा करने का निर्णय कर ही लिया है तो इसे मेरी अंतिम प्रार्थना समझिये, क्योंकि मैं उस महिषी को न तो अपनी दासी बना सकती और न ही आपके वासना की क्रीड़ास्थली के रूप में देख सकती।'

झील राजा- (अप्रतिभ होकर) 'प्रिये! ये तुम क्या कह रही हो, तुम्हारे जीवन से मेरा जीवन जुड़ा है, यह बात जरूर है कि हारमती से विवाह कर पाने की असफलता अब तक मेरे हृदय को कचोटती है, पर वो कचोट हृदय में बसे तुम्हारे प्रेम के सम्मुख नगण्य है।'

(द्वार सेविका का आज्ञा लेकर आगमन)

द्वार सेविका – 'महाराज मुख्य द्वार से संदेश आया है कि ईटायोपा के प्रधानमंत्री महारानी हारमती के साथ पधार चुके हैं।

झीलराजा- 'क्या! रानी हारमती मंत्री जी के साथ पधार चुकी है, जाओ उन्हें ससम्मान अतिथि कक्ष में पहुँचाओ हम वहीं पहुँचते हैं।'

रानी- 'महामना, मैं उस महिषी के दर्शन हेतु आपकी आज्ञा चाहती हूँ।'

राजा- 'जैसी आपकी इच्छा।'

षष्ठ दृश्य

(झील राजा का अतिथि कक्ष हारमती व मंत्री सिर झुकाए खड़े हैं राजा व रानी का प्रवेश मंत्री द्वारा अभिवादन)

मंत्री- 'राजन की जय हो। मैं आज ईटायोपा की प्रतिष्ठा आपके हाथों में सौंपने आया हूँ।'

हारमती– 'राजन! यह दासी आपकी सेवा में हाजिर है, आज यह कितनी मजबूर है कि अपना प्राण भी नहीं त्यज सकती। क्योंकि कितने जीवन इस तुच्छ प्राण के साथ जुड़े हैं, खैर राजन, आप चिंतित न हो। सैनिक टुकड़ी व मछुआरों के जाने के बाद भी यह जीवन समाप्त न होगा क्योंकि एक जीव इस शरीर में उदरस्थ है और उसके बाद आपको विश्वास दिलाती हूँ कि यह शरीर आपकी सेवा में पूर्णतया समर्पित होगा। अब इस शरीर में आत्मा का निवास तो है नहीं तथा आपको हारमती का शरीर चाहिए था, हारमती अपना आत्माविहीन शरीर आपको प्रदान करने में कभी कोई कमी न करेगी।'

झीलराजा- (पश्चाताप करते हुए विनीत स्वर में) 'बहन हारमती, मैं कुछ क्षणों के लिए मदांध हो गया था। जो महापातक बनकर तुम्हारे गृहस्थ जीवन को अग्नि के भेंट चढ़ा दिया। अब मैं तुमसे क्षमा माँगू भी तो किस प्रकार यदि हो सके तो इस नराधम भ्राता को क्षमा कर दो। मंत्रिवर, आप अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ महारानी को वापस ले जाइये। (रुककर) नहीं ठहरिये मैं स्वयं ही चलता हूँ, महाराज पोलो डूलिया के चरणों में सिर रखकर अपने अपराध के लिए क्षमा मांगूँगा, मेरा अपराध ईश्वर भी वैसे क्षमा न कर सकेगा पर यदि इस जीवन संध्या तक महाराज और महारानी से क्षमा प्राप्त हो जाय तभी मन को शांति मिलेगी, ईश्वर के दरबार में जो सजा होगी वह तो भुगतना ही पड़ेगा।'

हारमती- 'पर राजन, अब मैं ईटायोपा वापस कैसे जा सकती हूँ? मैंने आपके द्वारा इच्छित होने के बाद आपकी दासी बनकर महाराज के चरणों को त्याग दिया है, अब पुनः महाराज के हृदय में किस प्रकार स्थान पाऊँगी।

झीलराजा- 'नहीं बहन, मेरे पापों को और न बढ़ाओ, तुम लौट जाओ, अन्यथा मुझे ये जीवन त्याग कर अपना प्रायश्चित ईश्वर के सम्मुख जाकर करना होगा।'

रानी- (हारमती के चरण पकड़ते हुए) 'बहन, अपने पति के अपराधों के लिए तुम्हारे चरण पड़ती हूँ, तुम लौट जाओ, ताकि हमारा राज्य तुम्हारे सत्य के कोप से बच सके व राजन भी प्रायश्चित कर सके।'

हारमती- (रानी को उठाते हुए) 'बहन, आप भी नारी हैं, एक नारी के लिए पति का घर छोड़कर दूसरे की दासी के रूप में निकलते ही उसका शरीर अपवित्र हो जाता है। जिस प्रकार देवता के चरणों से उतारा फूल पुनः देवता के चरणों में नहीं चढ़ाया जा सकता। उसी प्रकार मैं वापस ईटायोपा महाराज की सेवा में नहीं जा सकती। मैं आज मृत्यु का वरण भी तो नहीं कर सकती क्योंकि मेरे उदर में एक निरीह जीव पल रहा है अन्यथा आज मैं अपने संपूर्ण अन्तःकरण से राजन को क्षमा कर ईश्वरलीन हो जाती।'

मंत्री- 'महारानी, आप इस प्रकार ईटायोपा व महाराज को अपने स्नेह से कैसे वंचित कर सकती हैं।'

हारमती- 'मंत्रिवर! मेरा स्नेह ईटायोपा से सदैव रहा है और रहेगा, महाराज का प्रेम ही मेरा जीवन मार्ग है, वह सदैव अक्षुण्ण रहेगा, पर मैं ईटायोपा राज्य में प्रवेश की अधिकारिणी नहीं रह गई।'

झीलराजा- 'तो बहन, मेरा एक निवेदन स्वीकार करो, मेरे राज्य में अहोम राज्य की सीमा पर एक किला है, वहीं मेरी बहन के रूप में निवास कर शासन करो तथा आने वाले बच्चे का जीवन मार्ग बनाओ।'

रानी- 'बहन, ये निवेदन स्वीकार कर हमारे पाप के बोझ को हल्का करो।'

हारमती-'जैसी आपकी आज्ञा।'

झीलराजा- 'धन्य हो देवी, निश्चय ही तुम्हारा नाम सदैव पूर्वी हिमालय क्षेत्र में अमर रहेगा व वह किला सदैव तुम्हारे नाम से जाना जायेगा।'

मंत्री- 'धन्य यो महारानी, धन्य है ईटायोपा तुम-सी रानी पाकर।'

रानी- 'आज मैं कृतार्थ हुई, बहन, जब भी नारी को अपने धर्म को याद करना होगा तुम्हारा चरित्र सदैव उन्हें मार्ग दिखाता रहेगा।'

--------पटाक्षेप----------

*(**लेखकीय परिचय:** डॉ. मुनीन्द्र मिश्र त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा में उप कुलसचिव के पद पर कार्यरत हैं। पूर्वोत्तर की भाषा एवं समाज-संस्कृति पर केंद्रित आपकी रचनात्मक भागीदारी में महनीय है। आप पूर्वोत्तर में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और अनुवाद कार्य में कई वर्षों से अनवरत जुटे हैं। मोबा. 8974819758, ईमेल : mishramuneendra@gmail.com)*